PG. SEM-I Paper-II

## हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का वास्तविक सूत्रपात 19वीं शताब्दी से माना जाता है। यद्यपि मध्यकाल में रचित वार्ता साहित्य यथा - चौरासी वैष्णव की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता, भक्तमाल, आदि में अनेक कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय मिल जाता है, किन्तु इतिहास लेखन के लिए जो कालक्रमानुसार वर्णन अपेक्षित होता है उसका नितांत अभाव इन ग्रंथों में मिल जाता है। अतः इन्हें साहित्य का इतिहास ग्रंथ नहीं माना जा सकता। वस्तुतः हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का सर्वप्रथम प्रयास गार्सां द - तॉसी का ही समझा जाता है। अतः मैं वहीं से चर्चा शुरू करती हूँ —

(1) गार्सां द तॉसी कृत "इस्तवार द ला लितरेत्यूर ऐन्दुई ए ऐन्दुस्तानी" (1839 ई०) - पेरिस विश्वविद्यालय में उर्दू के प्रोफेसर गार्सां द तासी ने उक्त नाम से हिन्दुई और हिन्दुस्तानी का इतिहास फ्रांसीसी भाषा में रचा था। इसका पहला संस्करण दो भागों में प्रकाशित हुआ था - पहला भाग 1839 ई० में एवं दूसरा भाग 1847 ई० में। पहले भाग में कवि परिचय था और दूसरे भाग में कवियों की रचनाओं के उदाहरण उक्त ग्रंथ के प्रथम भाग में कुल 138 कवि और लेखक थे जिसमें हिन्दी के केवल 72 थे, शेष उर्दू के थे लेकिन तॉसी की रचना को कुछ लोग इतिहास नहीं मानते हैं, क्योंकि यह रचना कालक्रमानुसार न होकर लेखकों के वर्णानुक्रम से है और आचार्य नलिन विलोचन शर्मा तॉसी को हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास लेखक मानते हैं।

(2) मौलवी करीमुद्दीन कृत "तबकातुश्शुअरा" (सन्
यह मुख्यतः तासी के ग्रंथ का अनुवाद है इसमें करीमुद्दीन साहब ने बहुत कुछ जोड़ने का प्रयास किया है पर उन्हें सफलता नहीं मिली है। फिर भी डॉ० महादेव साह एवं श्री नारायण पाण्डेय ने इसे हिन्दी साहित्य का इतिहास माना है।

(3) शिवसिंह सेंगर कृत "शिवसिंह सरोज" (1883 ई०)
इन्होंने इस ग्रंथ में लगभग 1003 भाषा कवियों का जीवन चरित उनकी कविताओं के उदाहरण के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है इन्होंने एक-एक शती में होने वाले कवियों की गणना की है। ये हिन्दी की जड़ की खोज करते हुए सं० 770 वि० में होनेवाले पुंड कवि तक पहुँच गए हैं। इनमें भी कवियों का परिचय क्रम से दिया गया है।

(4) डा० सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन कृत "द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान" (188
इतिहास कहने के लिए दो चीजों का होना आवश्यक माना जाता है (1) कालक्रमानुसार कवि परिचय और (2) काल विभाजन। ये दोनों बातें इसी पुस्तक में मिलती हैं अतः इसे हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ग्रंथ होने का गौरव प्राप्त है। इस ग्रंथ का पुनर्मुद्रण नहीं हुआ और यह दुर्लभ हो गया था अतः डा० किशोरी लाल गुप्त ने इस पुस्तक का अनुवाद 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' नाम से 1957 में किया। ग्रियर्सन के इस ग्रंथ की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं —

(क) इसमें पहली बार कवियों का वर्णन कालक्रमानुसार किया गया है।

(क) इसमें हिन्दी साहित्य के विभिन्न काल विभाजन किए गए हैं।
(ख) कुछ कालों की संक्षिप्त सामान्य प्रवृत्तियाँ भी दी गयी हैं।
(ग) प्रत्येक कवि की एक संख्या दी गयी है।
(घ) 18 कवियों का विवरण विस्तार से दिया गया है।
(ङ) इसमें जायसी और तुलसी पर अलग-अलग अध्ययन है।
(च) भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का स्वर्णयुग मानना ग्रियर्सन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

इस प्रकार निःसंदेह कहा जा सकता है कि ग्रियर्सन का यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य के इतिहास की नींव का वह पत्थर है, जिस पर आचार्य शुक्ल ने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास का भव्य भवन निर्मित किया।

(5) मिश्रबन्धु कृत - 'मिश्रबन्धु विनोद' (1913) मिश्रबन्धुओं ने हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास चार भागों में प्रकाशित कराया। प्रथम तीन भाग 1913 में तथा चतुर्थ भाग 1934 में प्रकाशित हुआ इन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास को निम्नलिखित कालों में विभाजित किया है -

(क) प्रारंभिक काल - संवत् 700 से 1444 वि० तक
(ख) माध्यमिक काल - " 1445 से 1680 " "
(ग) अलंकृत काल - " 1681 से 1889 " "
(घ) परिवर्तन काल - " 1890 से 1925 " "
(ङ) वर्तमान काल - " 1926 -

आ० रामचन्द्र शुक्ल ने इसे बड़ी भारी कविवृत्त संग्रह कहा है।

(6) (पादरी) एडविन ग्रीवज कृत 'एस्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर' (1917) 119 पृष्ठ

(7) पादरी एफ० ई० केई कृत 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' (1920) 116 पृष्ठ

ये दोनों अत्यन्त लघुकाय हैं। इनमें कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं है।

(8) आ० रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929 ई०) यह हिन्दी का सर्वाधिक एवं प्रथम सुव्यवस्थित इतिहास ग्रंथ है इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) शुक्ल जी ने आदि से अंत तक चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामन्जस्य दिखाया है।

(ii) शुक्ल जी द्वारा किया गया काल विभाजन ही सर्वमान्य एवं सर्वप्रचलित है।

(a) वीरगाथा काल — संवत् 1050 — 1375
(b) भक्ति काल — " 1375 — 1700
(c) रीतिकाल — " 1700 — 1900
(d) गद्यकाल — " 1900 — अब तक

(iii) जिस काल खण्ड के भीतर किसी विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखाई पड़ी है, वह एक अलग काल माना गया है और इसका नामकरण उन्हीं रचनाओं के स्वरूप के अनुसार किया गया है

(iv) एक ही काल और एक ही कोटि की रचना के भीतर जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की परम्पराएँ चलती हुई पायी गयी हैं। वहाँ अलग शाखाएँ करके सामग्री का विभाजन किया गया है।

(v) शुक्ल जी का उद्देश्य हिन्दी साहित्य के

इतिहास का एक पक्का और व्यवस्थित ढाँचा खड़ा करना था अतिए बहुत सारे कवियों का समावेश करना उन्हें अभीष्ट नहीं था। इन्होंने केवल प्रमुख कवियों को लिया है।

(vi) प्रत्येक काल या शाखा की सामान्य प्रवृत्तियों का वर्णन कर लेने के उपरान्त उससे संबद्ध प्रमुख कवियों का वर्णन उसके भी बाद फुटकल खाते में दिया गया है।

(vii) कवियों की साहित्यिक विशेषताओं के संबंध में इनके विचार संक्षिप्त एवं सटीक हैं।

(viii) हिन्दी में जो कुछ लिखा गया था, इन्होंने सब का समावेश करने का काम किया है।

(ix) इन्होंने पहली बार विचार किया कि साहित्य क्या है और साहित्येतर क्या है।

(x) शुक्ल जी ने कवियों की कविता के उदाहरण में जो रचनाएँ प्रस्तुत की हैं वे अत्यंत सरस हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण इनका अत्यधिक महत्व है।

(v) डॉ० रामकुमार वर्मा कृत 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' (1938) डॉ० वर्मा जी ने 693 ई० से 1693 तक की कालावधि को ही लिया है संपूर्ण ग्रंथ को सात प्रकरणों में इस प्रकार विभक्त किया गया है — (1) संधिकाल (2) चारण काल (3) भक्तिकाल की अनुक्रमणिका (4) भक्तिकाल (संतकाव्य) (5) प्रेमकाव्य (6) रामकाव्य (7) कृष्ण काव्य। 'वीरगाथा-काल' को 'चारण काल' की संज्ञा देने के अतिरिक्त उससे

पूर्व एक 'सन्धि काल' जोड़ दिया गया है।

(10) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत - 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' (1940 ई०) यह ग्रंथ क्रम और पद्धति की दृष्टि से इतिहास के रूप में प्रस्तुत नहीं है, किन्तु उसमें प्रस्तुत विभिन्न स्वतंत्र लेखों में कुछ ऐसे प्रदान करते हैं। इस पुस्तक की विशेषताएँ संक्षेप में इस प्रकार हैं -

(1) युगीन परिस्थितियों की जगह परंपरा को अधिक महत्व दिया गया।

(2) भक्ति आन्दोलन संतकाव्य परंपरा के स्रोतों प्रेमाख्यान काव्य के मूल उत्स आदि पर विचार करते हुए इन्होंने प्रमाणित किया कि प्राचीन साहित्य ही सभी के प्रेरणास्रोत हैं। वस्तुतः वे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने शुक्ल जी की अनेक स्थापनाओं को चुनौती देते हुए उन्हें सबल प्रमाणों के आधार पर खण्डन किया।

(11) आ० ह० प्र० द्विवेदी कृत - 'हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास' (1952) इधर काशी नागरी प्रचारिणी सभा सोलह खण्डों में हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास प्रस्तुत कर चुकी है। इसके अतिरिक्त कुछ इतिहास ग्रंथों का मैं केवल नामोल्लेख कर रहा हूँ -

(1) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र
(2) हिन्दी साहित्य का अतीत - पंडित विश्वनाथ प्र० मिश्र
(3) हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास - सूर्यकान्त शास्त्री
(4) हिन्दी भाषा और साहित्य - बाबू श्यामसुन्दर दास
(5) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डा० रसाल
(6) हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास - हरिऔधजी
(7) हिन्दी साहित्य का नया इतिहास - डा० रामखेलावन पाण्डेय।

(8) हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डा० जयकिशन प्र० खण्डेलवाल

(9) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डा० गणपति चन्द्रगुप्त

इसके अतिरिक्त अनेक शोध प्रबंध और समीक्षात्मक ग्रंथ लिखे गए हैं जो हिन्दी साहित्य के संपूर्ण इतिहास को तो नहीं किन्तु उसके किसी एक पक्ष पर प्रकाश डालते हैं। आज इन सभी सामग्रियों का उपयोग करते हुए नए सिरे से इतिहास लिखने की आवश्यकता है।